

એઠાનીયા



भागवान लुम्ब के कान

मैं अपने दोस्त तेजस के साथ पटना का बिहार म्यूज़ियम देखने गया। यह इमारत बहुत बड़ी और खूबसूरत है। इमारत को खूबसूरत बनाने के साथ—साथ यहाँ की साफ़—सफाई का भी बहुत ध्याल रखा गया है। यहाँ अनेक प्राचीन मूर्तियाँ हैं, जिन्हें सलीके से सजाया गया है। यहाँ पत्थरों से बने औज़ार हैं, अलग—अलग कला—कृतियाँ और धातुओं से बनी अनेक चीज़ें हैं। पकी मिट्टी है जिसे टेराकोटा कहते हैं, उससे बनी मूर्तियाँ और बर्तन भी हैं। मूर्तियों की बनावट, क़द—काठी और उस पर सजे वस्त्र प्राचीन काल के इतिहास को बताते हैं।





यहाँ भगवान् बुद्ध की कई मूर्तियाँ हैं। सभी मूर्तियों में बुद्ध के कान बड़े हैं। "क्या सचमुच बुद्ध के कान इतने बड़े थे?" मैंने अपने दोस्त से पूछा।

"वे कहानियाँ बहुत सुनते होंगे।" तेजस ने तपाक से जवाब दिया।

तेजस की दादीजी नहीं हैं। वह दादाजी के साथ रहता है। तेजस ने बताया, "दादाजी मेरी बात बहुत ध्यान से घंटों तक सुनते हैं। पता है, दादाजी भी बचपन में बहुत कहानियाँ सुनते थे। उनके कान भी बड़े हैं शायद..."

बुद्ध भी लोगों की बातें ध्यान से सुनते होंगे, इसलिए उनके कान भी बड़े हैं।" इतना कहकर तेजस ने रोहन का हाथ खिंचा और दोनों बिहार म्यूज़ियम देखने के लिए आगे की ओर बढ़ गए।

ਮज़ाबूत कंचे

रुही ने अब्बा की घड़े बनाने वाली मिट्टी से कुछ चिकनी मिट्टी निकाली । वह कुछ बनाने लग गई । तभी उसका छोटा भाई अनवर आया और बोला,

"अरे! रुही अप्पी, ये क्या कर रही हैं?"

"देख रहे हो ना, गोलियाँ बना रही हूँ ।" रुही अप्पी बोलीं ।

"हाँ, मगर इतनी सारी गोलियाँ! इनसे आप क्या करेंगी? अपने लिए माला बनाएँगी?"

"नहीं ।"

"मैं कंचे बना रही हूँ ।"

"कंचे! वे भी मिट्टी के? कंचे तो काँच के होते हैं न?"

"हाँ। काँच के कंचे तो बाहर से लाने पड़ेंगे। मैं मिट्टी की गोलियों से अपने कंचे बनाऊँगी।"



“आखिर आप इनका करेंगी क्या?”

“खेलूँगी और क्या?”

“किसके साथ?”

“तुम्हारे साथ!”

“हा हा हा... इनसे खेलेंगे तो गोलियाँ एक ही बार में टूटकर बिखर जाएँगी।”

“मैं टूटने दूँगी तब न।”

“तो आप ऐसा क्या करेंगी?”

“मैं इन्हें आग में पकाऊँगी। आग में पककर ये मज़बूत हो जाएँगी।”

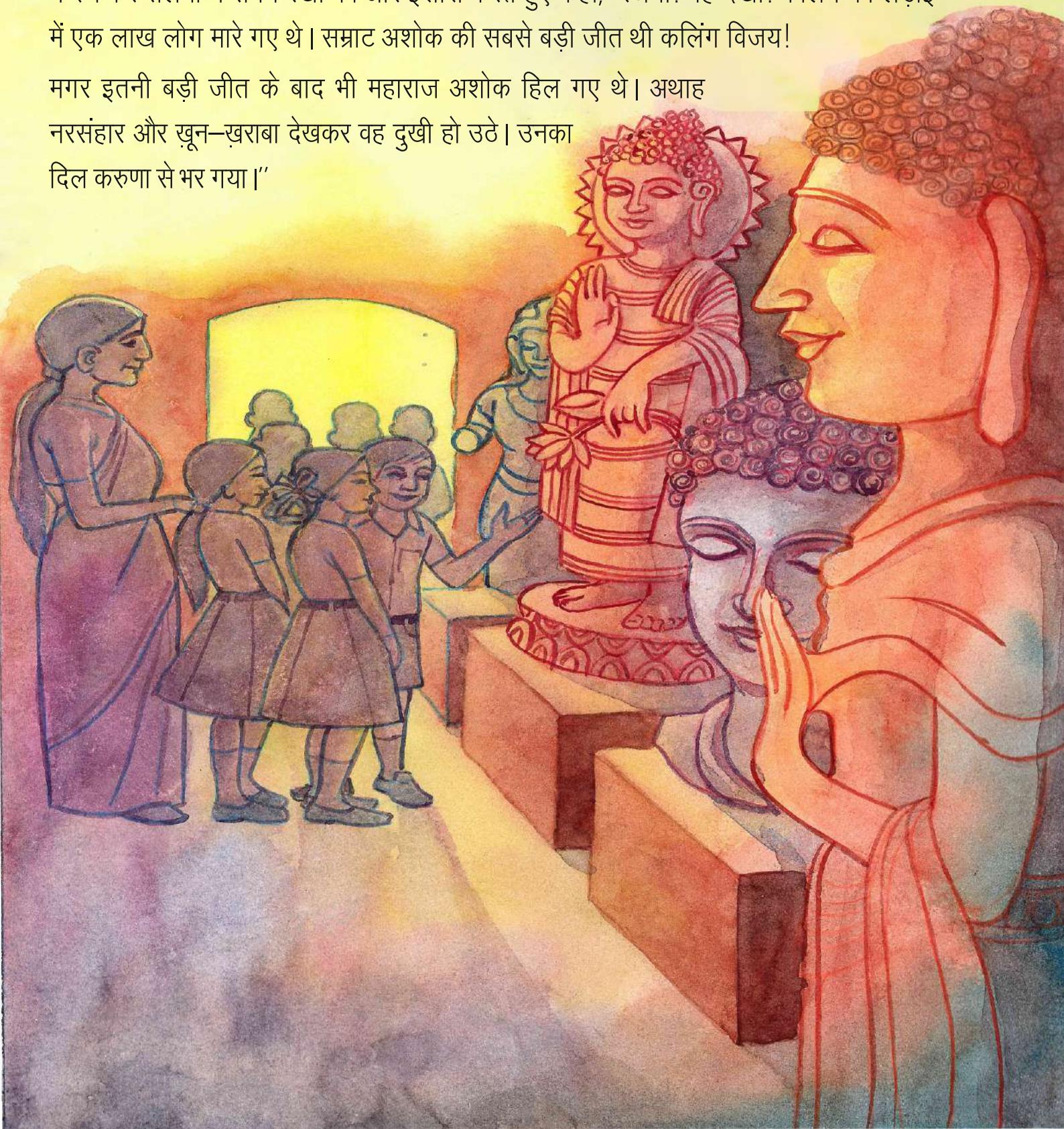
“हाँ! बड़ा मज़ा आएगा,” अनवर बोला। “चलिए, हम दोनों मिलकर बनाते हैं कच्ची मिट्टी के मज़बूत कंचे।”



बुद्ध की मुरक्कान

सलमा, अकुल, रजनी और सुनील अपनी टीचर के साथ पटना आए थे। गाँव से चलकर पटना आना और बिहार संग्रहालय की सैर करना बहुत ही आनंददायी रहा। सब ने मजेदार फ़िल्म भी देखी। बिहार के सुनहरे इतिहास के बारे में बहुत कुछ जाना। यह संग्रहालय एशिया का सबसे बड़ा संग्रहालय है। बिहार की अनमोल धरोहर। यहाँ अलग—अलग गैलरी में इतिहास की झाँकी और दुर्लभ मूर्तियाँ अनोखी जानकारियाँ दे रही थीं। एक गैलरी में रुककर सलमा ने समय रेखा की ओर इशारा करते हुए कहा, "रजनी! वह देखो! कलिंग की लड़ाई में एक लाख लोग मारे गए थे। सप्ताष्ट अशोक की सबसे बड़ी जीत थी कलिंग विजय!"

मगर इतनी बड़ी जीत के बाद भी महाराज अशोक हिल गए थे। अथाह नरसंहार और खून—खराबा देखकर वह दुखी हो उठे। उनका दिल करुणा से भर गया।"

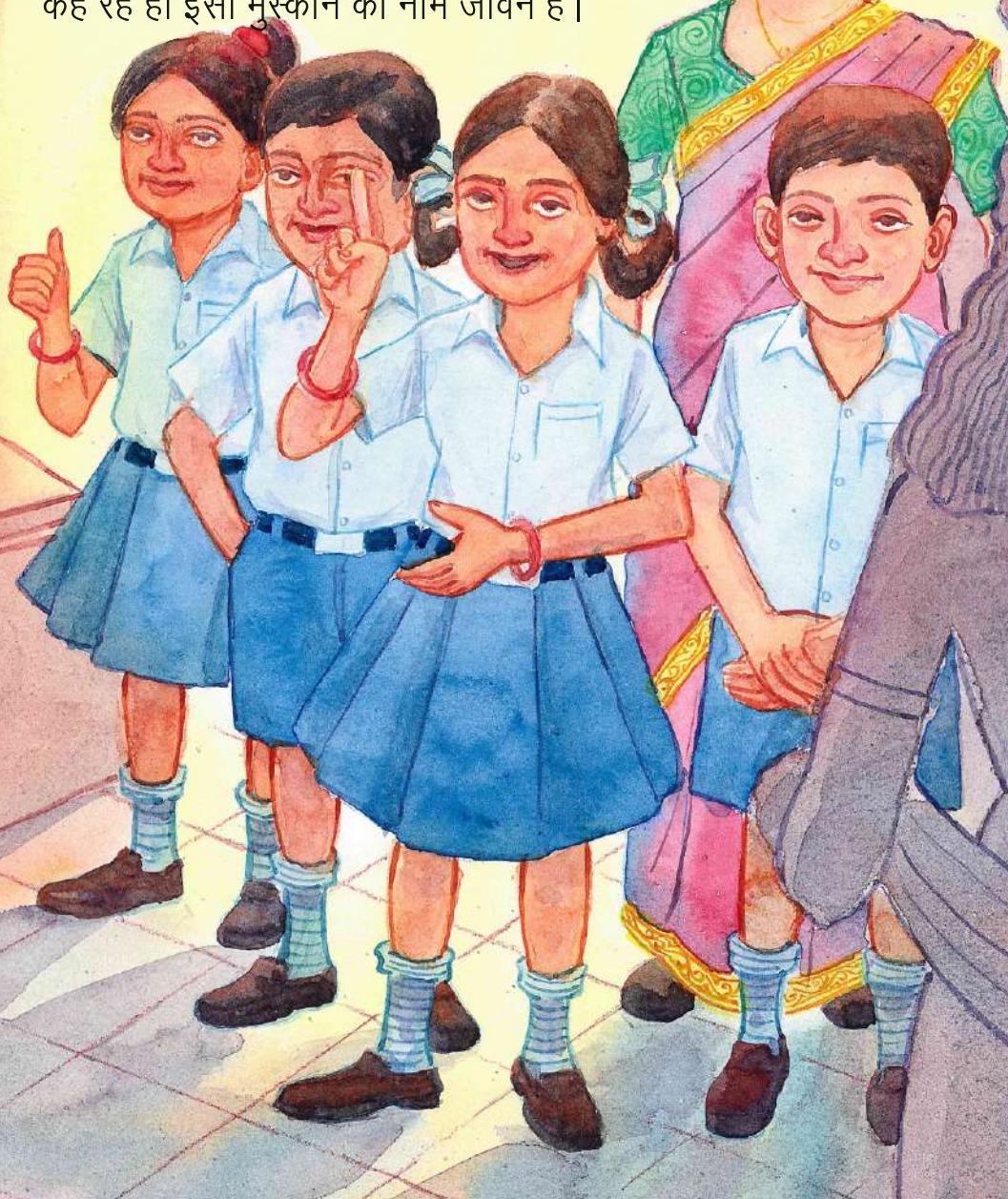


“‘प्यार और शान्ति की खोज में वे भगवान बुद्ध की शरण में चले गए,” टीचर ने समझाते हुए कहा।”

“भगवान बुद्ध भी तो इसी तरह अपना राजपाट छोड़कर चले गए थे न, मैम?” सुनील ने सवाल किया।

“हाँ, तुमने बिल्कुल सही कहा सुनील। बुद्ध की हर मूर्ति हमें शान्ति और प्यार का संदेश देती है।”

अगली गैलरी में अलग—अलग मुद्राओं में भगवान बुद्ध की मूर्तियाँ सजी थीं। सभी में भगवान् बुद्ध मंद—मंद मुस्कुरा रहे थे। ऐसा लग रहा था, जैसे कह रहे हों इसी मुस्कान का नाम जीवन है।





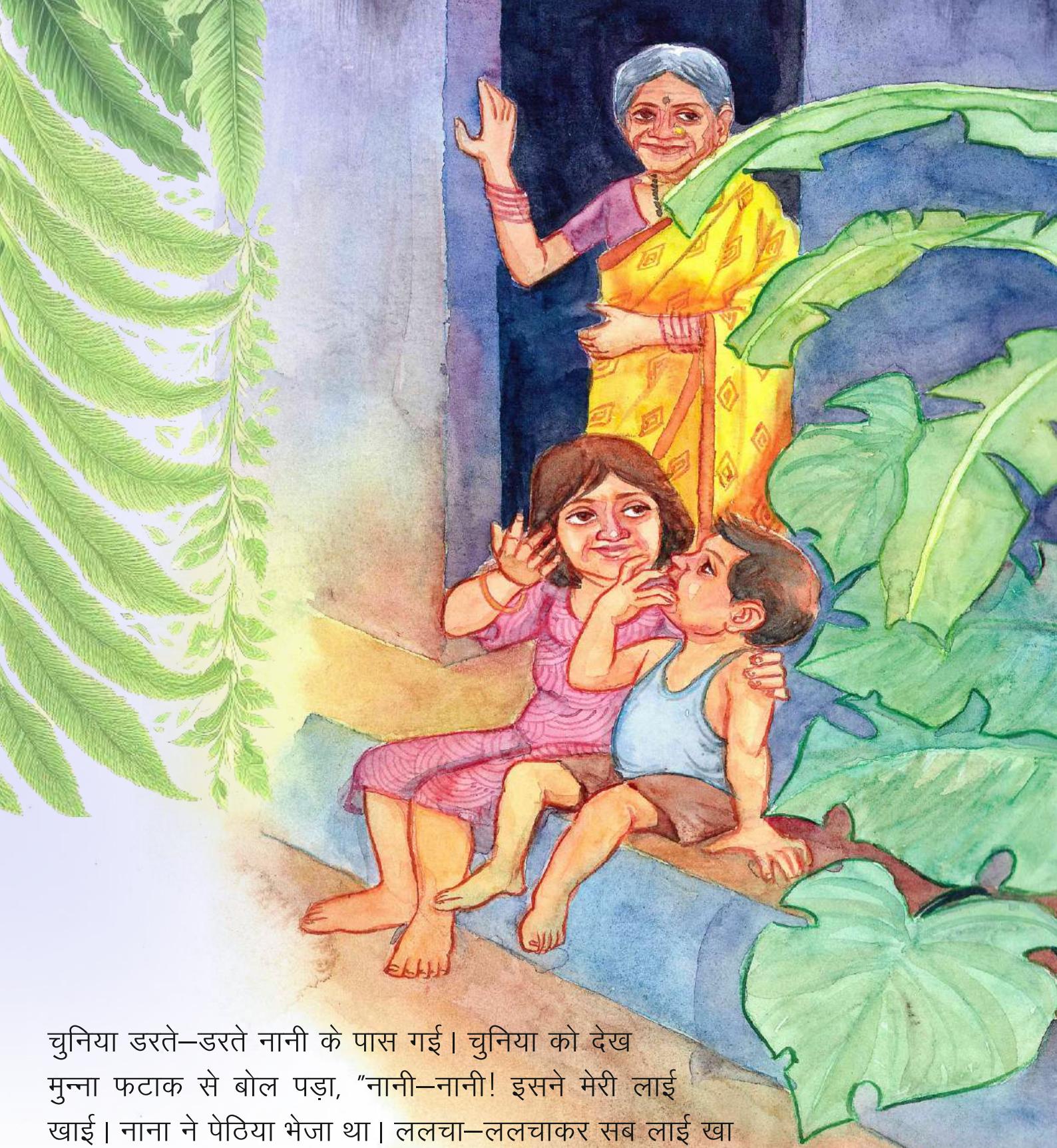
मुन्ना और चुनिया

मुन्ना मुँह फुलाए बैठा था। नानी उसे लगातार मना रही थीं। जब भी वह उसे मनाने की कोशिश करतीं, वह कभी इधर मुँह घुमा लेता, तो कभी उधर।

उन्होंने लेमन—जूस दिया, किस्से सुनाए, नया खिलौना दिलाने के लिए भी कहा। मुन्ना फिर भी मुँह फुलाए रहा। नानी परेशान हो गई, मुन्ना को मनाएँ तो मनाएँ कैसे?

नानी बस यही सोच रही थीं, "आखिर आज मुन्ना को हुआ क्या है? माँ ने डाँटा? कहीं नाना ने तो कुछ नहीं कह दिया?" इस तरह की न जाने क्या—क्या बातें उनके दिमाग में चल रही थीं। पहले कभी मुन्ना ऐसे नहीं रूसता था। अगर रूसता भी था, तो जल्दी ही मान भी जाता था। जरूर चुनिया की कोई करामात होगी।

"चुनिया ओ चुनिया? यहाँ आओ तो!" नानी ने ऊँचे स्वर में पुकारा।



चुनिया डरते—डरते नानी के पास गई। चुनिया को देख
मुन्ना फटाक से बोल पड़ा, “नानी—नानी! इसने मेरी लाई
खाई। नाना ने पेठिया भेजा था। ललचा—ललचाकर सब लाई खा
गई। “नानी हमको लाई चाहिए। हम लाई खाए बिना नहीं रहेंगे?”

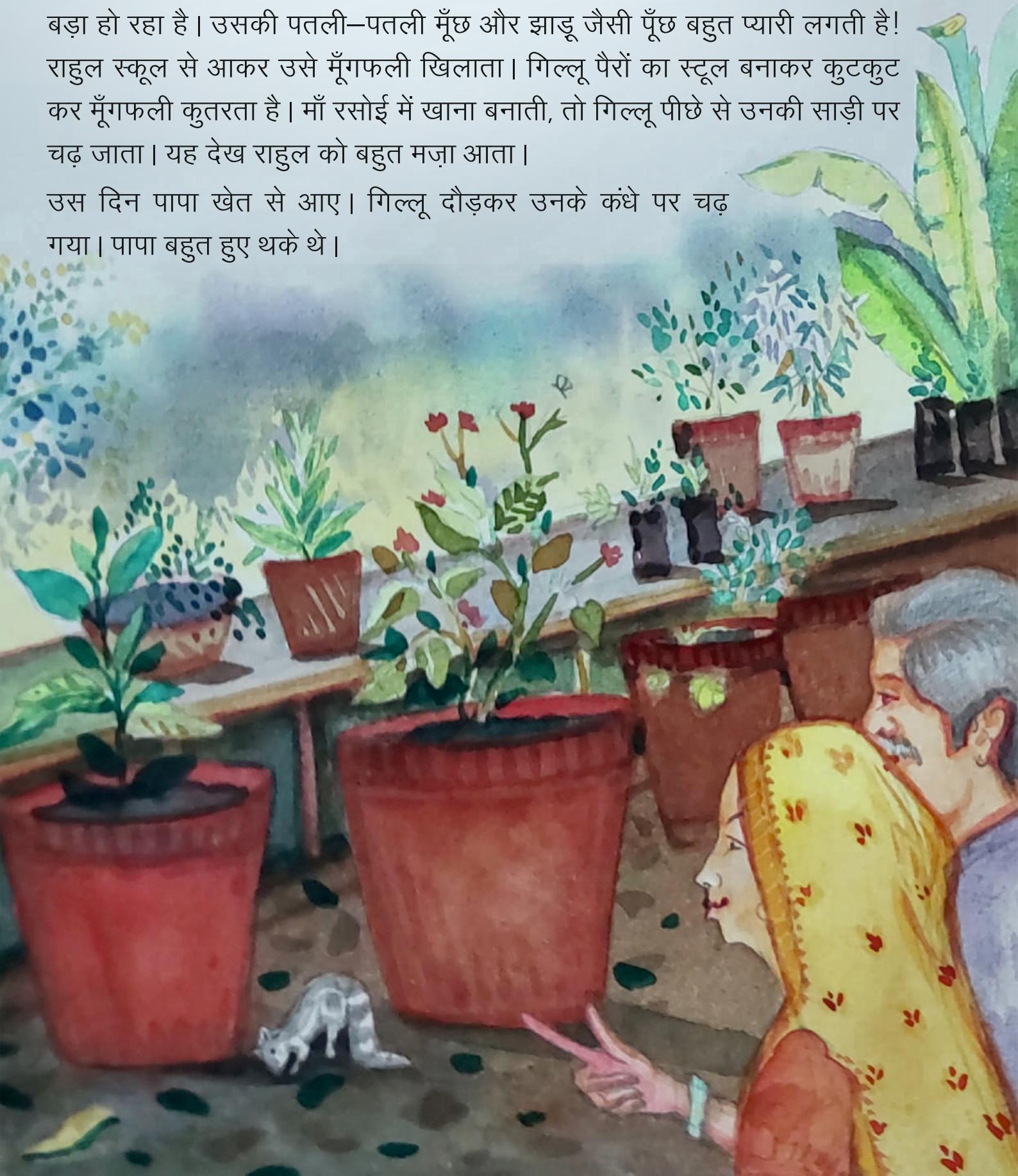
नानी ने चुनिया की ओर देखा। नानी कुछ कहती इससे पहले ही चुनिया ने फ़ॉक की जेब से
लाई निकाल कर मुन्ना की ओर बढ़ा दी, “मुन्ना, तुम्हारे बिना लाई खाना मुझे भी अच्छा नहीं
लगा। अब हम दोनों मिलकर लाई खाएँगे।” नानी मुस्कुरा रही थीं, उनकी सारी परेशानी जो
दूर हो गई थी।

गिल्लू

गिल्लू राहुल का सबसे प्यारा दोस्त है। कुछ महीने पहले वह बगीचे में दो गमलों के बीच पड़ा मिला था। कहीं कोई बिल्ली खा ना जाए, सोचकर मम्मी—पापा उसे उठा लाए।

माँ ने रुई की बत्ती से उसे दूध पिलाया। पापा ने उसके धावों पर मरहम लगाया। अब वह बड़ा हो रहा है। उसकी पतली—पतली मूँछ और झाड़ू जैसी पूँछ बहुत प्यारी लगती है! राहुल स्कूल से आकर उसे मूँगफली खिलाता। गिल्लू पैरों का स्टूल बनाकर कुटकुट कर मूँगफली कुतरता है। माँ रसोई में खाना बनाती, तो गिल्लू पीछे से उनकी साड़ी पर चढ़ जाता। यह देख राहुल को बहुत मज़ा आता।

उस दिन पापा खेत से आए। गिल्लू दौड़कर उनके कंधे पर चढ़ गया। पापा बहुत हुए थके थे।



उन्होंने उसे झटक दिया। तब से वह कहीं मिल नहीं रहा। राहुल ने उसे हर जगह ढूँढ़ा। ढूँढ़ते—ढूँढ़ते वह थक गया। अचानक! उसकी नज़र पलंग के नीचे रखे पापा के जूतों पर पड़ी। गिल्लू जूते के ऊपर बैठा गोल—गोल आँखें घुमा रहा था।

गिल्लू को देखते ही राहुल खुशी से चिल्लाया मेरा गिल्लू मिल गया... मेरा गिल्लू मिल गया!



कटोरी में मिट्टी

पिछले कुछ दिनों से गुल्ली को मिट्टी खाने की आदत हो गई है। माँ को चिंता सताने लगी। कहीं पेट में कीड़े ना पड़ जाएँ, गुल्ली बीमार ना हो जाए! माँ ने गुल्ली को समझाया। अब माँ हर वक्त उस पर नज़र रखने लगीं। लेकिन गुल्ली फिर भी माँ की नज़रों से बचकर मिट्टी खा ही लेती थी।

आँगन हो या खेल का मैदान! कोई गमला या टूटी दीवार! गुल्ली अपने खाने के लिए मिट्टी ढूँढ़ लेती। एक दिन दोपहर का समय था। गुल्ली कहीं दिखाई नहीं दे रही थी। माँ घर के पिछवाड़े गई। गुल्ली एक कोने में बैठी टूटी दीवार की दरारों से मिट्टी कुरेद—कुरेद कर खा रही थी।



यह देखकर माँ को बहुत गुस्सा आया। वह रसोई में गई और एक कटोरी और चम्मच ले आई। "ना, ना गुल्ली, बुरी बात! बेटा, ऐसे नहीं खाते। ये कटोरी लो, इसमें रखकर मज़े से खाओ।" यह कहते हुए उन्होंने कटोरी गुल्ली की तरफ बढ़ा दी। आज माँ ने न ही डॉटा, न ही मिठ्ठी खाने के लिए मना किया। ये देखकर गुल्ली को झटका—सा लगा। वह कटोरी को हाथ से खिसकाते हुए बोली, "मिठ्ठी खाना बुली बात! आज से मैं मिठ्ठी नहीं खाऊँगी।" गुल्ली की इस मासूम हरकत पर माँ मुस्कुरा दीं।



जा माफ किया

कालू हाथी झूमता हुआ चला जा रहा था। उसने पूरे बग़ीचे में ख़ब तबाही मचाई थी। पेड़ों की हरी-हरी डालियाँ तोड़ डाली थी। छोटे-छोटे पौधों को कुचल दिया था। फिर भी वह मर्स्ती से चला जा रहा था। विशालकाय और काली चट्टान जैसा हाथी।

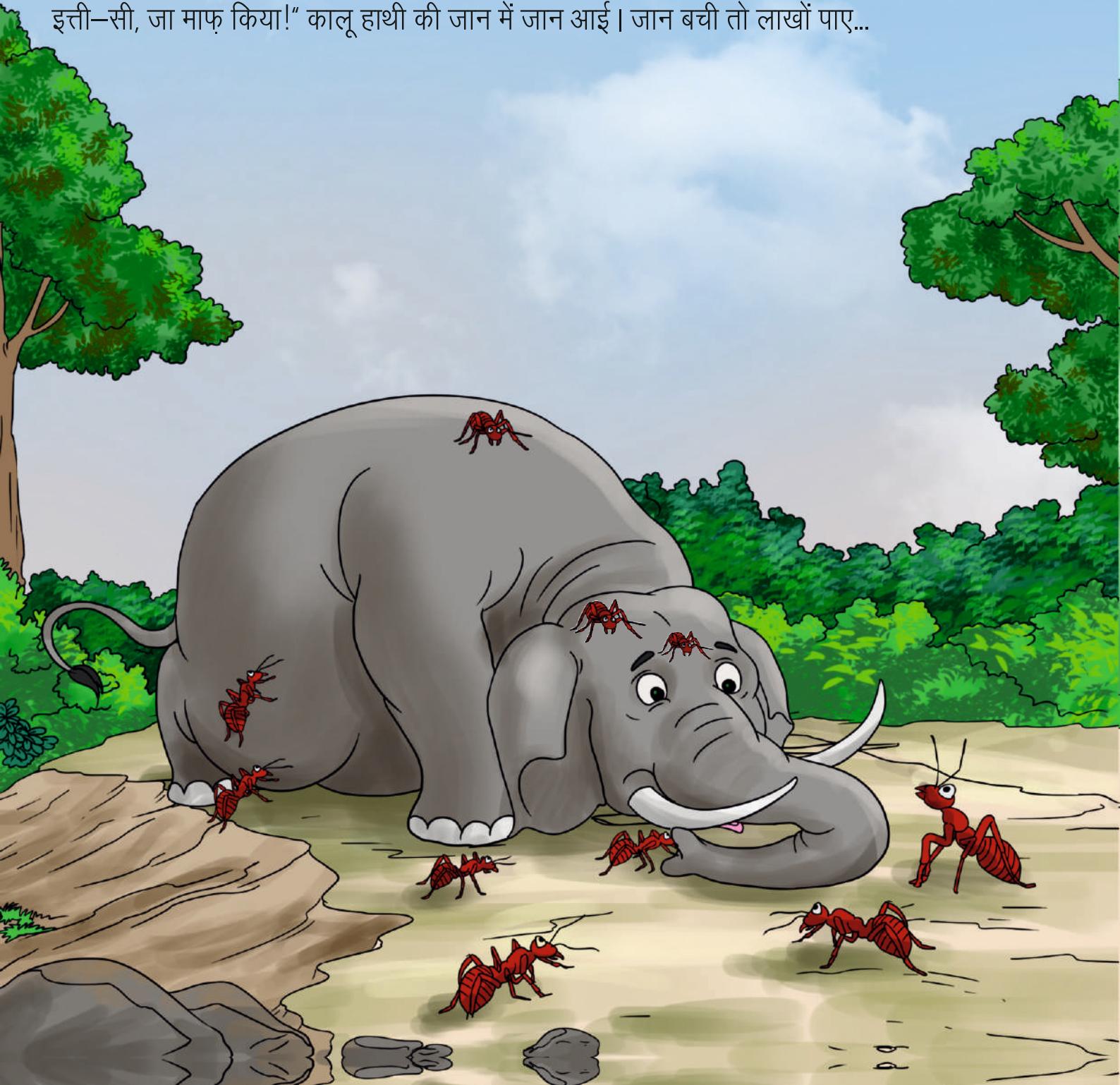
रास्ता कच्चा था और धूल से भरा था। चीटियाँ उसी रास्ते पर कतार में चल रही थीं नन्हीं-नन्हीं चीटियों ने हाथी को देखा और बोली, "बाप रे! इतना बड़ा और पहाड़—सा हाथी।"

तभी हाथी ने अपनी सूँड से धूल उठाई। वह सूँड से चारों तरफ धूल उड़ाने लगा। कभी धूल उठाकर अपनी पीठ पर उँड़ेलने लगा। धूल के साथ चीटियाँ भी उड़ने लगी।



कुछ चींटियाँ हवा के साथ लहराते हुए हाथी के मस्तक पर जा बैर्टीं। कुछ धूल के साथ हाथी की सूँड में जा घुसीं। सभी चींटियाँ एक आवाज में बोली, "धूल उड़ाने का बहुत शौक है, तो अब मज़ा भी चख।" सब ने एक साथ हाथी पर धावा बोल दिया। कुछ चींटियाँ उसके बड़े-बड़े कानों में घुस गईं। कुछ सूँड में घुस गईं। सभी ने चिकोटी काटना शुरू कर दिया।

हाथी बुरी तरह छटपटाने लगा। उसे अपनी नानी याद आ गई। उसका खुद पर बस नहीं चल रहा था। वह गिरकर लोटने लगा। वह अपनी सूँड और कानों को बार-बार झटक रहा था। हाथी को इस तरह छटपटाते देख चींटियों को उस पर दया आ गई। वे सभी बाहर निकल आईं और बोलीं, "इतना बड़ा शरीर और जान इत्ती-सी, जा माफ़ किया!" कालू हाथी की जान में जान आई। जान बची तो लाखों पाए...

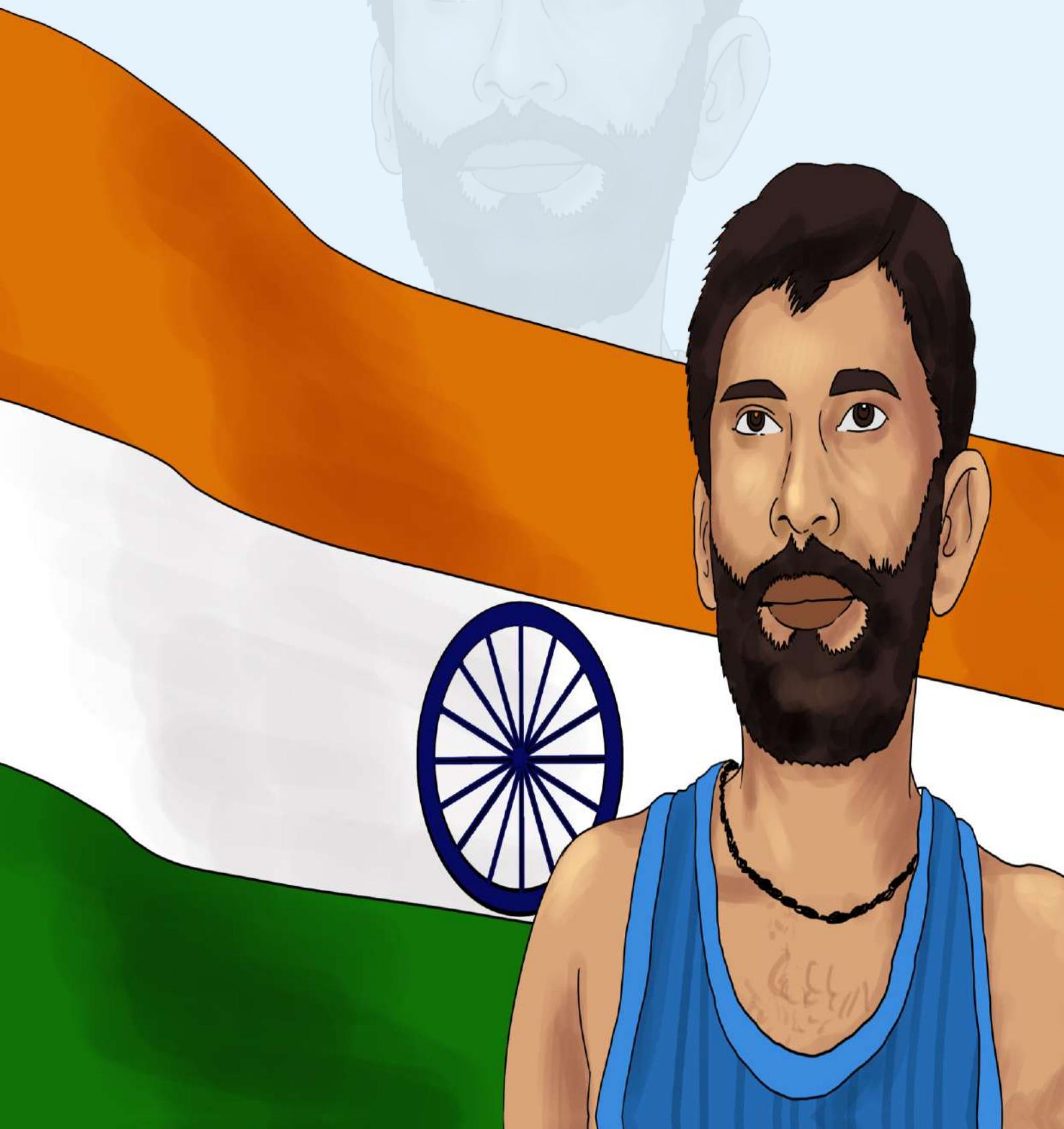


रप्तार

यह किस्सा बिहार के बक्सर ज़िले के छोटे—से गाँव मझरिया का है। गाँव में एक बालक था जिसका मन किताबों में नहीं लगता था। वह हरदम नदी के किनारे घंटों दौड़ता रहता था। हमेशा इस बालक का ध्यान गंगा की लहरों, हिरण्यों और घोड़परास की रफ़तार पर रहता था। वह हमेशा रफ़तार और निरंतरता की तलाश में रहता। अक्सर गाँव के लोग उस बालक की शिकायत उसकी माँ से करते रहते थे। एक दिन एक औरत उसकी माँ से बोली, "बहन, जब मैं सुबह खेत में जा रही थी, तब तुम्हारा बेटा बड़की बाड़ी मैं दौड़ रहा था। जब खेत से लौट रही थी तब भी वह दौड़ ही रहा था। लगता है उसे कुछ हो गया है। तुम उसे किसी को दिखाओ।" अक्सर उसे देखकर लोग इसी तरह की बातें करते। माँ उसे समझाती और अपने बेटे के लिए दुआएँ माँगती।



दौड़ के इस पागलपन ने इस बालक को लंबी रेस का घोड़ा बना दिया। जी हाँ, अब तक आप समझ ही गए होंगे, ये बालक कोई और नहीं, शिवनाथ हैं! इन्होंने मैराथन दौड़ में भाग लेकर 2 घंटे 12 मिनट में 42 किलोमीटर की दूरी का रिकॉर्ड तोड़ा था। आज शिवनाथ भले ही इस दुनियाँ में नहीं हैं, लेकिन उनकी मैराथन दौड़ का रिकॉर्ड आज भी ज़िंदा है, जो बार-बार हमसे कहता है यह रिकॉर्ड आप भी तोड़ सकते हैं। ज़रूरत है, तो एक कोशिश और लग्न की।



मछली और बगुला

तालाब के पानी से एक मछली बाहर उछली। उसे दिखा किनारे पर एक बगुला! एक टाँग पर खड़ा। बगुले ने मछली को बाहर उछलते, फिर वापस पानी में जाते देखा। उसने आह भरी। "काश! यह मछली ज़रा पास उछली होती! इतनी देर की मेरी तपर्या सफल हो जाती। खड़े—खड़े तो टाँगें दुखने लगीं। चोंच के अंदर एक मकोड़ा तक नहीं आया। लगता है, आज दिन यूँ ही बीत जाएगा।"

उसने जो निराश होकर पानी के अंदर देखा तो दिखी एक मछली। वही मछली! वह खुश हुआ। उसे गटकने को गर्दन ज़रा नीचे की, तभी मछली ने पानी से मुँह बाहर निकाला। कहा, "भैया! इतनी देर से यहाँ क्यों खड़े हो।

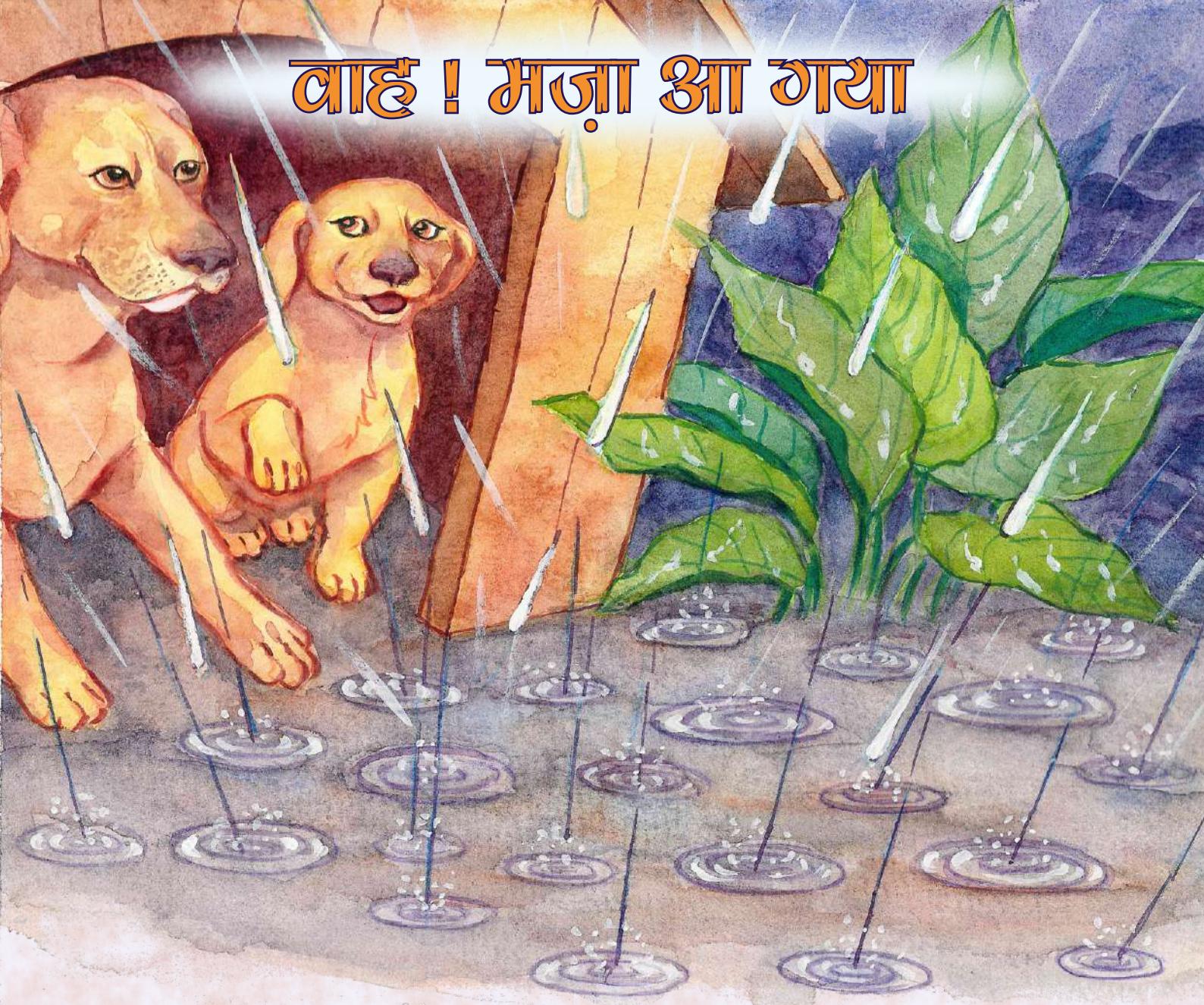


टाँगें बदलते टाँगें भरतीं नहीं क्या? अब बैठ भी जाओ।"

बगुले को बात अच्छी लगी। कहने लगा, "क्या कहूँ बहिना। सुबह से पेट खाली है। और खड़े—खड़े थक भी गया हूँ।" मछली बोली, "यही हाल मेरा भी है। तालाब में मछलियाँ अब हैं कहाँ? देखते नहीं, पानी कितना कम रह गया है। तालाब तो चारों ओर से भरता जा रहा है।" इस तरह दोनों ने खूब बातें कीं।



बाहू ! भज़ा आ गया



कूकू पिल्ला अपनी माँ के साथ एक झोपड़ी में बैठा था। अचानक हड़—हड़, हड़—हड़ की आवाज़ गूँजने लगी। हवा तेज़ी से बहने लगी। पेड़ों की पत्तियाँ खड़खड़ाने लगीं। बूँदा—बाँदी शुरू हो गई। कूकू ने बाहर झाँककर देखा, 'टिप—टिप... टप—टप...'! कूकू ने अचरज से कहा, "माँ देखो, आकाश में छेद हो गया। लगातार पानी टपक रहा है।"

माँ ने बाहर झाँका। फिर समझाया, "अरे पगले! आकाश में छेद नहीं हुआ है। आकाश में बादल छाए हुए हैं और बादलों से ही ये पानी बरस रहा है।"

"माँ, मैं बाहर जाऊँ क्या?" कूकू ने पूछा।

"नहीं बेटे! सर्दी लग जाएगी। जुकाम हो जाएगा। बीमार पड़ जाओगे।

इसलिए भीतर ही रहो।" माँ ने आँखें मूँदते हुए कहा।

कूकू ने बाहर झाँका। चिड़ियाँ मजे से नहा रही थीं। सभी चिड़ियों ने पंख फैला रखे थे। उनक भीगना, फुदकना, चहकना कूकू को बहुत भा रहा था। "मैं भी आ रहा हूँ, दोस्तो!" कूकू से रहा नहीं गया और चुपके से बाहर दौड़ पड़ा। वह चिड़ियों की ओर भागा।



मगर उसके बाहर पहुँचते ही सभी चिड़ियाँ फुर्र से उड़ गईं। कूकू को हँसी आ गई। "अरे! मैं तो तुम सबको दोस्त बनाना चाहता था। तुम्हारे साथ नहाने का मज़ा लेना चाहता था। मगर भागी क्यों, डर गई क्या? डरपोक कहीं की!" कूकू भीग-भीगकर अकेला ही उछलने-कूदने लगा। कभी दौड़ लगाता, तो कभी आसमान की ओर देखने लगता। कितना सुहाना मौसम है!

तभी उसे ज़ोरों की छींक आई। नाक से पानी बहने लगा। छींकें बार-बार आतीं। इन्हीं छींकों की आवाज़ से माँ की नींद खुल गई। बाहर कूकू का बुरा हाल था। माँ ने पुचकारते हुए पास बुलाया। कू—कू करते हुए, कूकू माँ की गोद में जा बैठा। माँ ने उसे सीने चिपका लिया। मुँह और दुम से माँ कूकू की देह का पानी झाड़ने लगी। माँ की गोद की गर्मी से कूकू को गरमाहट मिली। वह कू—कू करता लाड़ जताने लगा। फिर चपड़—चपड़ माँ का दूध पीने लगा।

मज़ा आ गया आज। कूकू मन ही मन यही सोच रहा था। माँ अभी भी उसे सहलाए जा रही थी।



मैना

एक हफ्ते से मानू की तबीयत काफ़ी ख़राब है। वह काफ़ी कमज़ोर भी हो गई है। कई दिनों से वह घर की छत पर नहीं गई। न उसने उछल—कूद की और न कोई खेल खेला। बिस्तर पर गुमसुम उदास सी पड़ी रहती है। किसी से बात भी नहीं करती। उसका कुछ खाने का भी मन नहीं करता।

आज मानू कुछ बेहतर लग रही है। उसे बुख़ार भी नहीं है। भूख भी लग रही है। खाने का स्वाद भी लौट रहा है। लेकिन उसकी हँसी और चुलबुलापन कहीं खो गया है। माँ और छोटी बहन रानू ने कई बार उसे हँसाने की कोशिश की। रानू ने तो कई चुटकुले भी सुनाए। लेकिन मानू बस मुस्कुरा कर रह गई।

शाम का समय था। मानू ने अपनी बहन रानू से पूछा, “मेरे सभी दोस्त कैसे हैं?”

“ठीक ही होंगे।”

“मतलब, क्या तुमने उन्हें दाना—पानी दिया?” उसने बेचैनी से पूछा।

मम्मी और मैं दो दिन दाना—पानी लेकर गए थे।

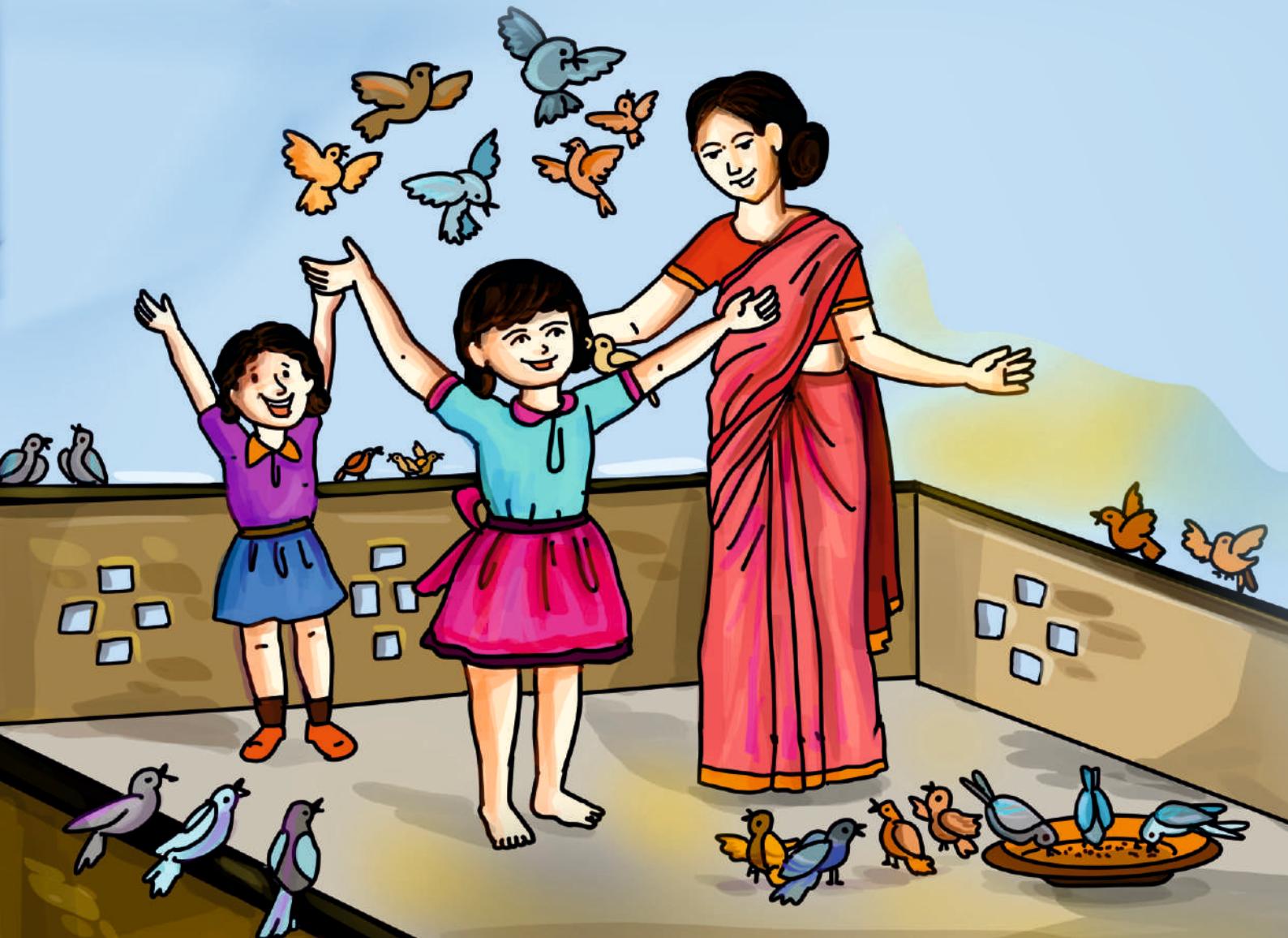
लेकिन न तो मैना आई, न ही कोई कबूतर और न ही कोई कौआ।" रानू ने जल्दी-जल्दी अपनी बात कह दी।

"इसका मतलब एक हफ़ते से मेरे दोस्तों ने भी कुछ नहीं खाया।"

यह कहते हुए वह रसोई में गई और दाना-पानी और कटोरी लेकर छत पर भागी। पीछे-पीछे उसकी माँ और बहन भी छत पर पहुँच गईं।

मानू छत पर दाने बिखेरते हुए आवाज़ लगाने लगी, "आओ, आओ।" मानू की आवाज़ सुनकर पहले मैना का एक बड़ा झुंड आया, फिर कुछ कबूतर आए। एक मैना तो मानू के कन्धे पर ही आकर बैठ गई। उसे देखकर वह बुद्बुदाई, "मेरी वजह से तुम सबको इतने दिन भूखे रहना पड़ा। अब मैं कभी बीमार नहीं पड़ूँगी।"

धीरे-धीरे पूरी छत अलग-अलग पक्षियों से भर गई। ऐसा लग रहा था जैसे कोई दावत चल रही हो। अब पूरी छत पर पक्षियों की चहचहाट से गूँज रही थी। मानू का खिला हुआ चेहरा देखकर माँ और रानू भी खुश थीं।





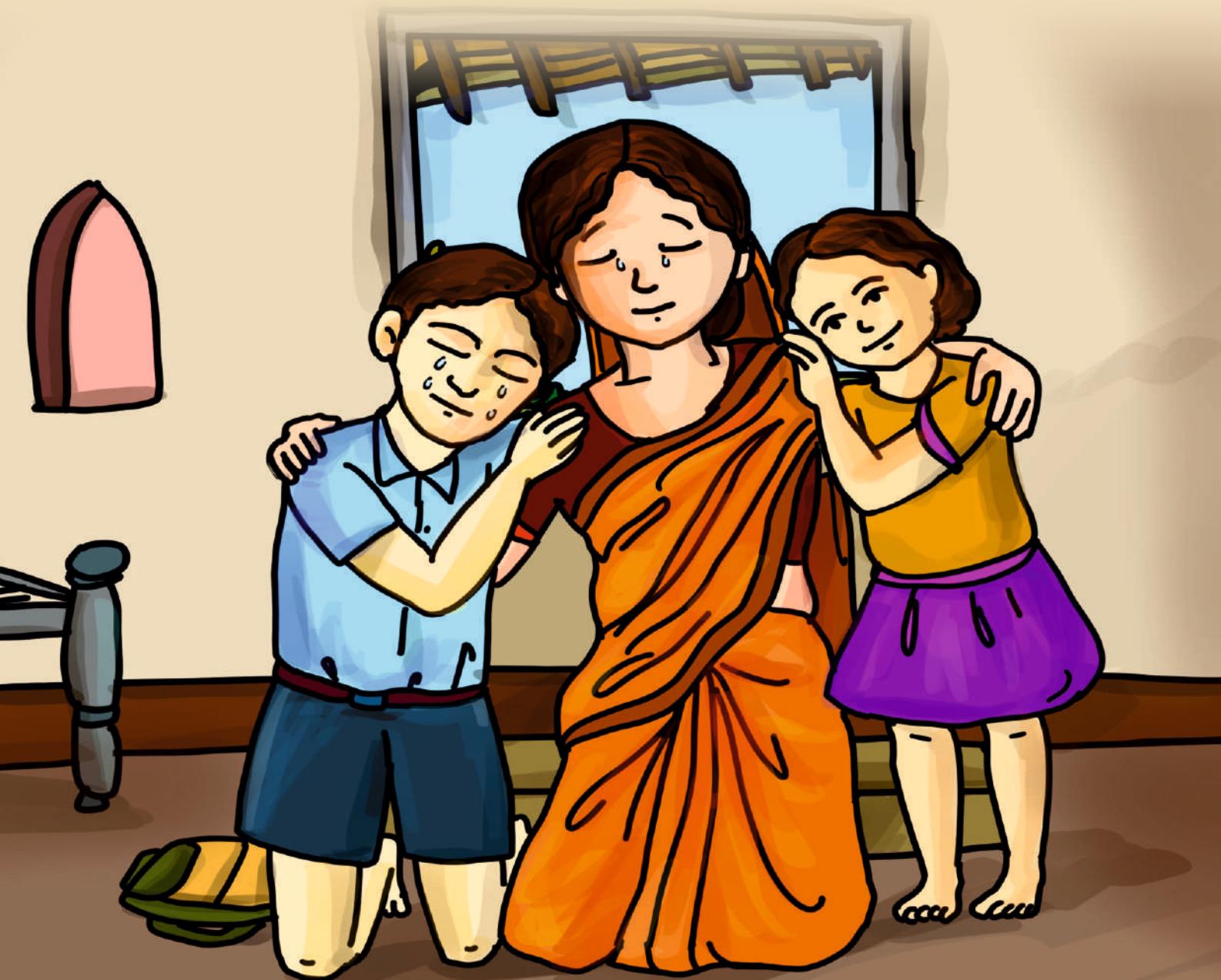
माँ

अविनाश स्कूल के गेट पर माँ का इंतज़ार कर रहा था। पिताजी तो किसी काम से बाहर गए हुए हैं। लेकिन, माँ अब तक क्यों नहीं आई? स्कूल में दीदी ने सभी बच्चों के माता-पिता को मिलने के लिए बुलाया था। सभी के माता-पिता विद्यालय पहुँच चुके थे। काफी देर माँ का इंतज़ार करने के बाद अविनाश बिना किसी को बताए घर की तरफ दौड़ पड़ा। उसने घर पहुँच कर माँ से कहा,— ‘सभी बच्चों के माता-पिता स्कूल पहुँच चुके हैं। आप अभी तक घर में ही हैं, जल्दी चलिए।’

“स्कूल में सभी बच्चों की माँ सुंदर—सुंदर कपड़े पहनकर आई होंगी। जिसमें वे खूबसूरत लग रही होंगी। मेरे पास तो ढंग की एक साड़ी भी नहीं है। मैं कैसे तुम्हारे स्कूल आ जाऊँ?”

माँ ने मायूसी से कहा । “

तभी अविनाश की बहन स्वीटी भी आ गई । दोनों भाई—बहन, माँ के गले में बाहें डालते हुए बोले, “माँ तो माँ होती है । माँ को सुन्दर दिखने के लिए सुंदर कपड़ों की ज़रूरत नहीं होती । असली सुंदरता तो माँ की ममता है । आप हमारी सबसे सुंदर और प्यारी माँ हैं ।” दोनों बच्चों की बातें सुनकर माँ की आँखों से आँसू छलक पड़े । अपने आँसू पोछते हुए वह उठ खड़ी हुई और बोलीं, “अब स्कूल चलें, नहीं तो देर हो जाएगी ।”



नायल और नायला

"मैं लूँगा | मैं लूँगा |" नायल बोला |

"नहीं, मैं लूँगी," नायला चिल्लाई |

"नहीं, मुझे दो |" नायल ने ज़िद की |

"पापा, देखो ना इसे, ये हमेशा ऐसा ही करता है | जो चीज़ मुझे पसंद होती है वही इसे भी चाहिए होती है |" नायला ने रोनी सूरत बनाकर कहा | तभी नायला के स्कूल की बस का हॉर्न बजा | नायला बिस्कुट का पैकेट छीनकर बस की ओर भाग गई |

नायल रोता रह गया | पापा—मम्मी ने उसे चुप कराने की बहुत कोशिश की | लेकिन वह न माना | पापा दुकान से बिस्कुट का पैकेट भी ले आए | मगर नायल बार-बार यही बोलकर रोता रहा, "मुझे तो वही पैकेट चाहिए | मुझे तो वही बिस्कुट का पैकेट चाहिए |" कुछ देर तक नायल ऐसे ही रोता रहा | रोते-रोते उसकी आँख लग गई |



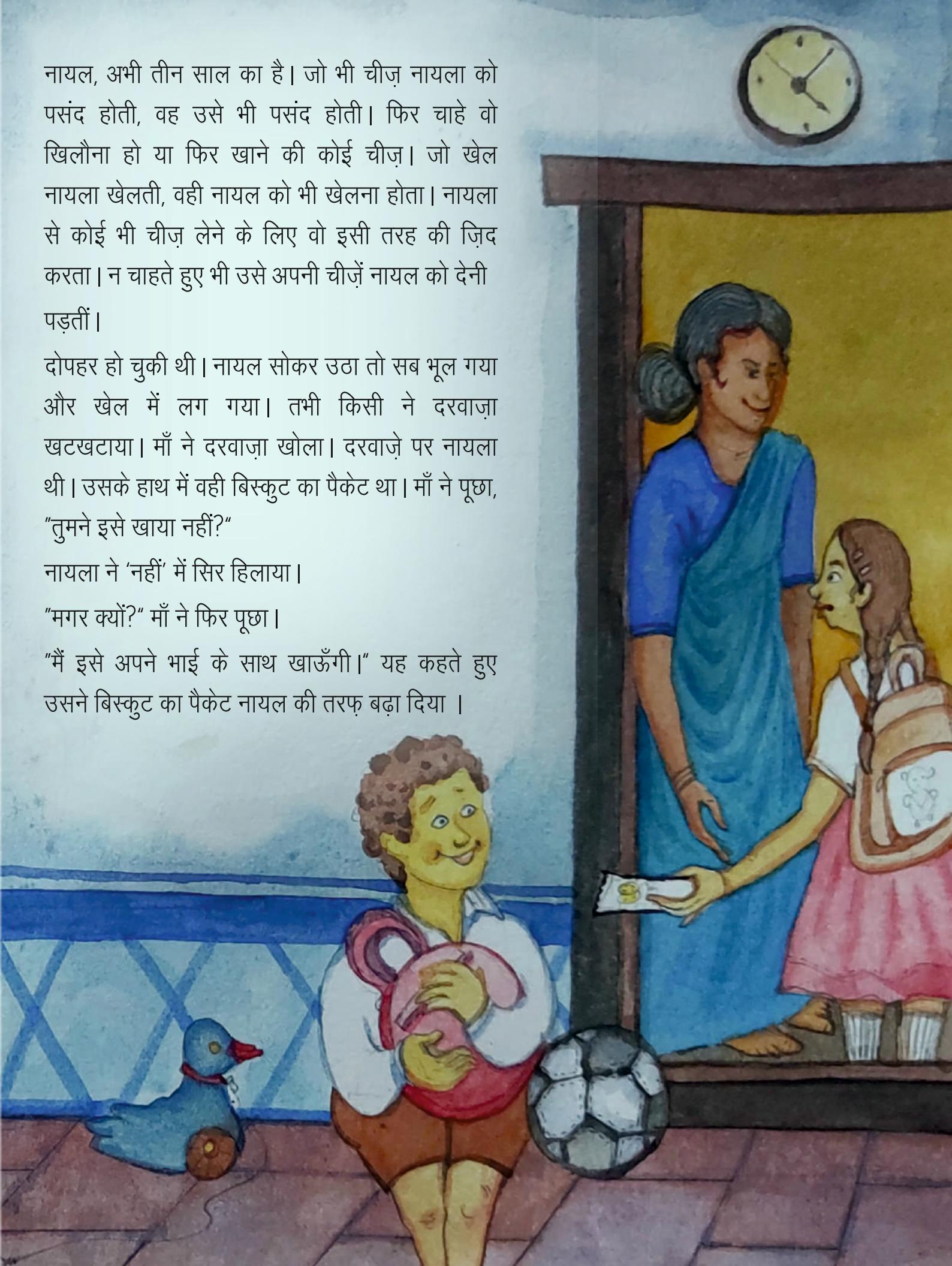
नायल, अभी तीन साल का है। जो भी चीज़ नायला को पसंद होती, वह उसे भी पसंद होती। फिर चाहे वो खिलौना हो या फिर खाने की कोई चीज़। जो खेल नायला खेलती, वही नायल को भी खेलना होता। नायला से कोई भी चीज़ लेने के लिए वो इसी तरह की ज़िद करता। न चाहते हुए भी उसे अपनी चीज़ें नायल को देनी पड़तीं।

दोपहर हो चुकी थी। नायल सोकर उठा तो सब भूल गया और खेल में लग गया। तभी किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। माँ ने दरवाज़ा खोला। दरवाजे पर नायला थी। उसके हाथ में वही बिस्कुट का पैकेट था। माँ ने पूछा, “तुमने इसे खाया नहीं?”

नायला ने ‘नहीं’ में सिर हिलाया।

“मगर क्यों?” माँ ने फिर पूछा।

“मैं इसे अपने भाई के साथ खाऊँगी।” यह कहते हुए उसने बिस्कुट का पैकेट नायल की तरफ बढ़ा दिया।



पूरी आधी

"मामू क्या कर रहे हैं?" अनम बोली।

"देख रही हो अनम कि खा रहा हूँ। फिर भी पूछ रही हो, क्या कर रहा हूँ?"

"मतलब, आप क्या खा रहे हैं।"

"पूड़ी खा रहा हूँ?"

"पूरी?"

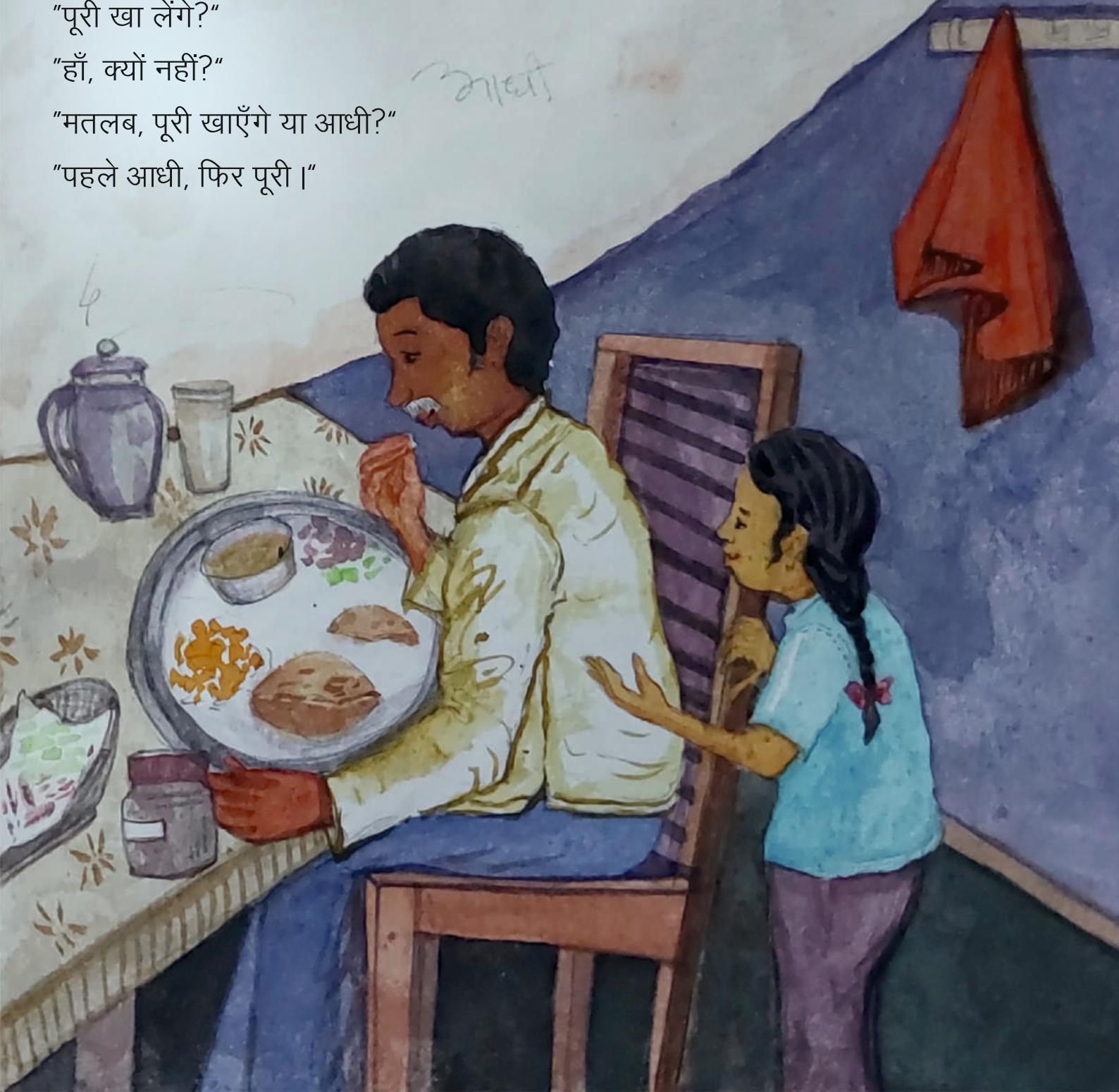
"हाँ, हाँ, पूड़ी खा रहा हूँ।"

"पूरी खा लेंगे?"

"हाँ, क्यों नहीं?"

"मतलब, पूरी खाएँगे या आधी?"

"पहले आधी, फिर पूरी।"



"अरे! मामू पूरी तो पूरी होती है, आधी कैसे?"

"मतलब?"

"जब पूरी खाएँगे तो क्यों कह रहे हैं आधी?"

"अरे बाबा! पहले आधी खाऊँगा फिर पूरी!"

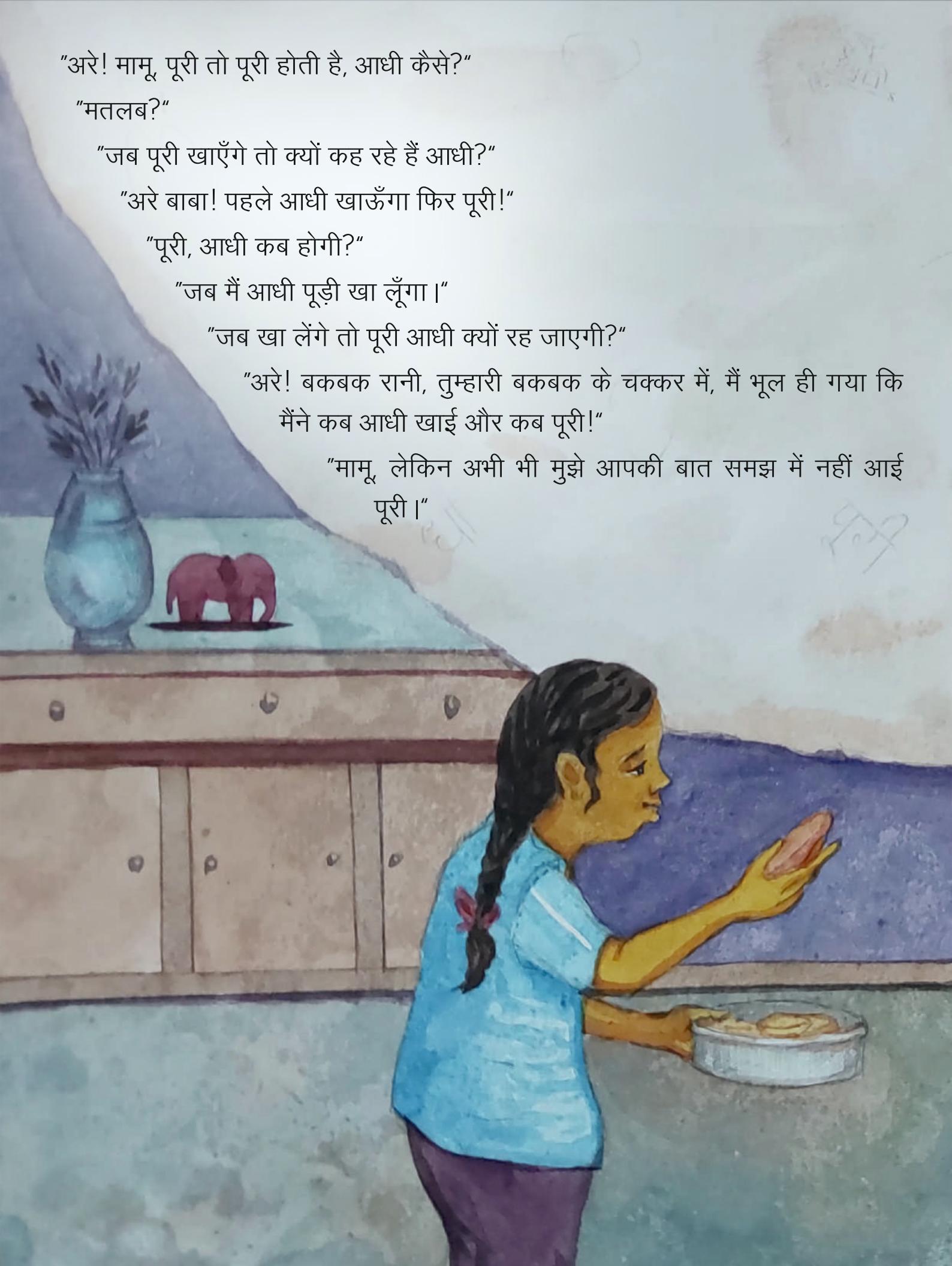
"पूरी, आधी कब होगी?"

"जब मैं आधी पूँड़ी खा लूँगा।"

"जब खा लेंगे तो पूरी आधी क्यों रह जाएगी?"

"अरे! बकबक रानी, तुम्हारी बकबक के चक्कर में, मैं भूल ही गया कि मैंने कब आधी खाई और कब पूरी!"

"मामू लेकिन अभी भी मुझे आपकी बात समझ में नहीं आई पूरी।"



खेल

छुट्टी के बाद सभी बच्चे उछलते—कूदते स्कूल से बाहर निकले। उनमें मंटू, मीना और मुरली भी थे। दोस्तों के साथ मटर—गशती करने में मंटू को बड़ा मज़ा आता था। मुरली धीमी चाल से सबके पीछे—पीछे आता। बचपन में पोलियो होने के कारण उसकी एक टाँग कमज़ोर हो गई थी। उसे स्कूल में दाखिला लिए कुछ ही दिन हुए हैं। अभी उसके ज्यादा दोस्त भी नहीं बने हैं। रोज़ सभी साथी, रास्ते में कुएँ पर रुक जाते। बस्ता रखकर पचास मीटर दूर बूढ़े पीपल के पेड़ तक रेस लगाते। रेस में अक्सर मंटू ही जीतता। मुरली एक पत्थर पर बैठकर उन्हें देखता और यह सोचता, “काश! मैं भी इन सब की तरह दौड़ पाता!” मगर उन्हें देखकर वह खुश रहता। जीतने वाले को खट्टी—मीठी संतरे की गोली भी खिलाता। उसके काका अक्सर शहर से उसके लिए ये गोलियाँ लाते थे। मंटू को मुरली अच्छा लगता है। वह चीज़ें भी बाँटकर खाता है। पढ़ने में भी अच्छा है। पर वे साथ खेल नहीं पाता है।

आज स्कूल से लौटते हुए कुएँ के पास एक मीटिंग हुई। सबके सरदार मंटू ने एक फैसला





किया, जिसे सबने मान भी लिया। जब तक मुरली कुएँ के पास पहुँचता, मिट्टी में खींची गई लकीरों में सब अपने—अपने खाने में खड़े हो गए। बीच में एक खाना खाली था। मंटू ने मुरली को लाकर उस खाने में खड़ा कर दिया।

“मुरली आज से तुम भी हमारे साथ दौड़ोगे।”

“पर मैं ...?”

“हाँ, दोस्त तुम”

“हम सब एक टाँग पर दौड़ेंगे। यानी लंगड़ी टाँग की रेस!”

“य्य्य्यै!” हाथ उठाकर सभी जोश में एक साथ चिल्लाए।

आज मुरली की खुशी का ठिकाना नहीं था।



शब्दको मामा

धुँध के कारण सभी परेशान हैं। चाहे जितने कपड़े पहन लो, सिहरन दूर ही नहीं होती। पंद्रह दिनों के लिए स्कूल भी बन्द कर दिए गए हैं। रीता खुश है कि उसे कुछ दिनों तक स्कूल नहीं जाना पड़ेगा।

“अच्छा हुआ स्कूल बंद हो गए।” रीता ने माँ की बग़ल में लेटते हुए कहा।

“क्यों तुम्हें स्कूल जाना क्यों नहीं अच्छा लगता?” माँ ने पूछा।

“सर और मैडम हमेशा डॉटते रहते हैं। ज़ोर से मत बोलो, चुप रहो! तुम हँसी क्यों? अगर कविता याद नहीं हुई तो पीछे जाकर खड़ी रहो। गणित में कहीं ग़लती हो जाए तो दिमाग में भूसा भरा है क्या? भला ये भी कोई बात हुई!” रीता ने एक ही साँस में सारी बातें कह डालीं, “हाँ, जानकी मैडम की बात अलग है। वह बहुत अच्छी हैं। वह हमें बीच—बीच में शाबाशी भी देती हैं। मुस्कुरा कर बात करती हैं। कहानियाँ सुनाती हैं।



कुछ समझ में न आए तो प्यार से समझाती हैं। उनकी बातें अच्छी लगती हैं। वे भी बहुत अच्छी हैं।”

“अब बाकी बातें कल, अभी सो जाओ। देखो, चंदा मामा भी कह रहे हैं। मैं आ गया हूँ, अब तुम सो जाओ।”

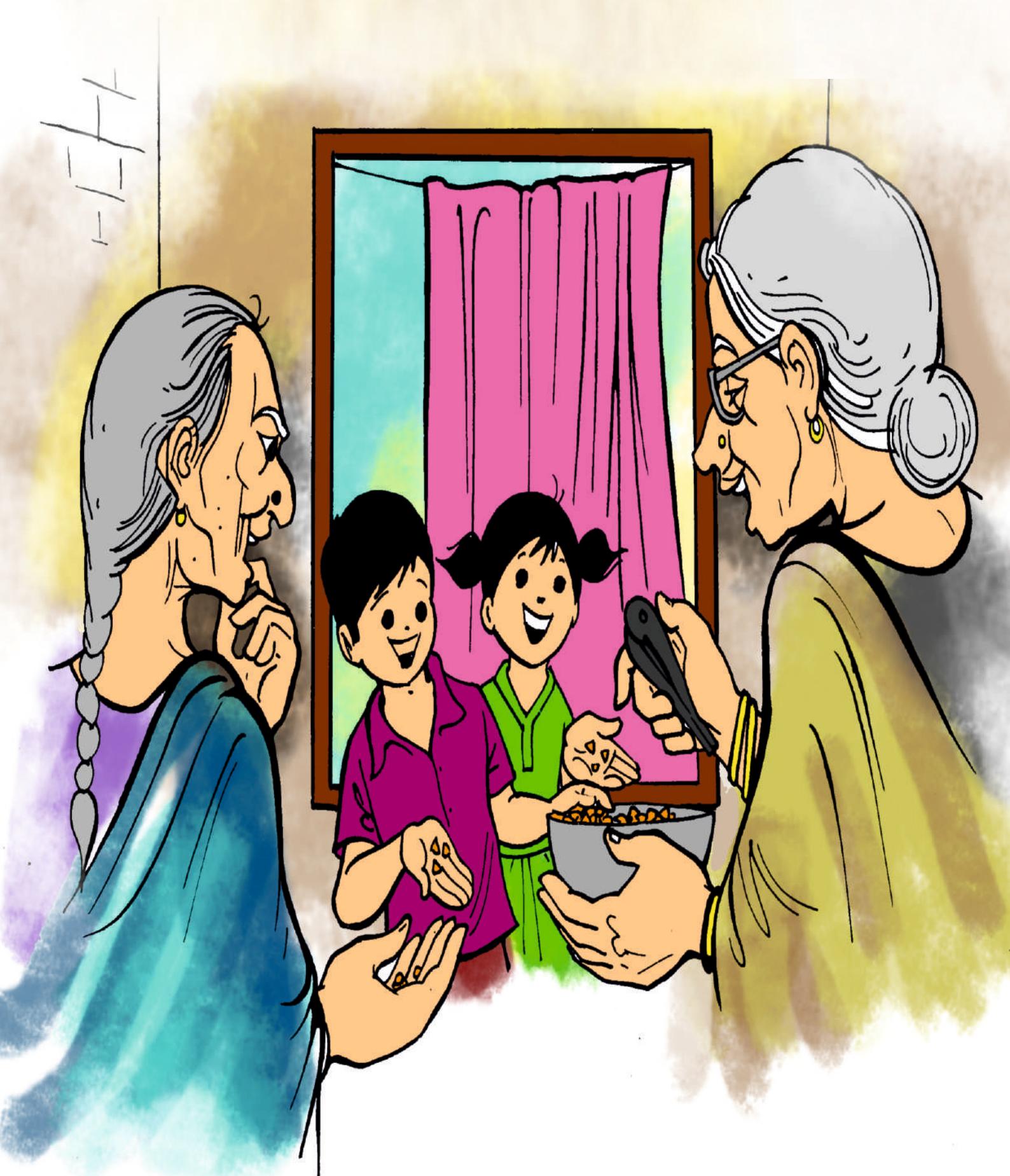
माँ की बात सुनकर रीता सोचने लगी, “क्या चंदा सब के मामा हैं? मेरे भी और माँ के भी? इसका जवाब कल माँ से ही पूछूँगी। बहुत देर हो गई है। अभी सो जाती हूँ।”

सुपारी के टुकड़े

मिथिला में सरौते से घर-घर सुपारी काटे जाने का चलन है। सुपारी काटते हैं, अतिथियों को कटी सुपारी देकर स्वागत करते हैं। नानी और छोटी नानी खटिए पर बैठकर सुपारी काट रही थीं। कुछ टुकड़े उछलते और बिखर जाते।



तभी पिंकी और रिंकू वहाँ आए। जैसे ही सुपारी का कोई टुकड़ा उछलता, वे लपक लेते। फिर नानी के कटोरे में रख देते। यह बच्चों के लिए खेल हो गया और नानी और छोटी नानी का भी काम बन गया।



बिन्नी की डल्टी चप्पल

बिन्नी एक साल की है। अभी—अभी उसने चलना सीखा है। उसे चलता देखकर उसके मम्मी—पापा बहुत खुश होते हैं। बिन्नी को घर की चीजें बालकनी से बाहर फेंकना बहुत पसंद है। न जाने क्यों मम्मी ऐसा करने से रोकती हैं। उसे मम्मी की डॉट बुरी नहीं लगती। बिन्नी को मम्मी की मेकअप की चीजें भी बहुत पसंद हैं। वह अक्सर मम्मी का मेकअप लगाती है। इसके लिए भी मम्मी उसे डॉटती हैं। बिन्नी को मम्मी की चप्पलें भी बहुत पसंद हैं। वह अक्सर मम्मी की चप्पलें पहनकर घर में इधर—उधर घूमती रहती है।

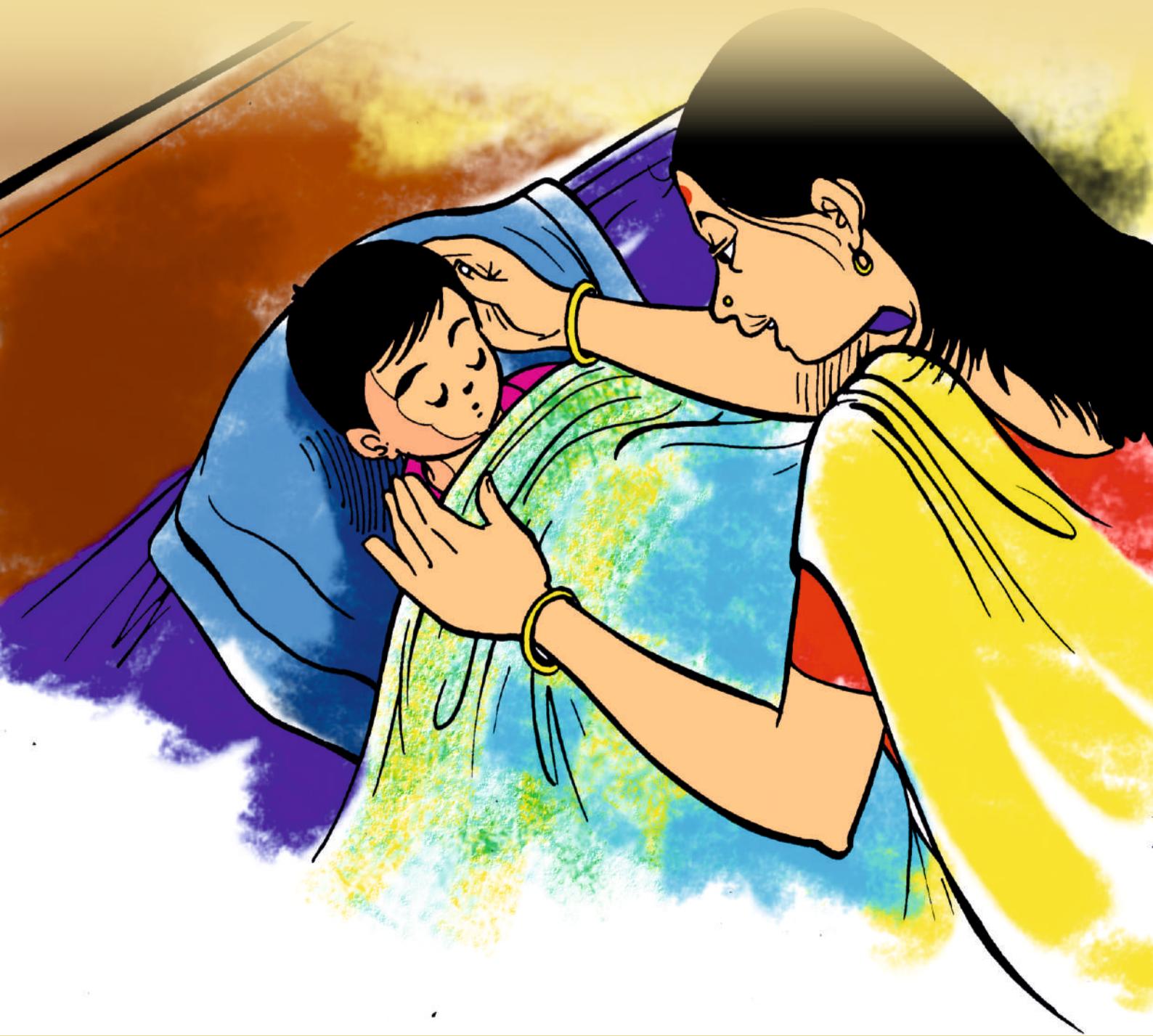




मम्मी बार—बार उसके पैरों से चप्पलें उतार देती हैं। उन्हें लगता है कि बिन्नी के नन्हे पाँव मम्मी की बड़ी चप्पलों को सँभाल नहीं पाएँगे और वह गिर जाएगी। कभी—कभी बिन्नी पापा के जूते पहनकर उनको घसीटती है। मम्मी उसे ऐसा करने से भी रोकती हैं। मम्मी ने बिन्नी के नाप की चप्पलें उसे लाकर दी हैं। बिन्नी उन चप्पलों को उल्टा पहनकर घूमती है। मम्मी इसके लिए भी, उसे बार—बार रोकती और टोकती हैं। बिन्नी को समझ नहीं आता कि मम्मी आखिर उसे क्यों रोकती हैं?

खोलो खोलो

माँ ने कहा— सुबह हो गई है, अब आँखें खोलो ।
दीदी ने कहा— कोई आया है, दरवाज़ा खोलो ।
टीचर ने कहा— पढ़ाई शुरू, किताबें खोलो ।
डाकिए ने कहा— लिफ्ट मिले हैं, उन्हें खोलो ।
भैया ने कहा— गिफ्ट मिले हैं, उन्हें खोलो ।
दूकानदार ने कहा— बोरियाँ खोलो ।
बुआ ने कहा— बंद कुकर खोलो ।
सब बच्चों ने कहा— अब, मिठाई का डिब्बा खोलो ।





मंटू सोचने लगा— एक बात समझ में नहीं आई, जब ट्रेन खुलती है तो चल पड़ती है, बस खुलती है तो चल पड़ती है, लेकिन दरवाज़ा खुलता है तो क्यों नहीं चलता? किताबें खुलती हैं तो क्यों नहीं चलतीं? कुकर क्यों नहीं चलता? लिफाफे क्यों नहीं चलते? मिठाई के डिब्बे क्यों नहीं चलते? आँखें खुलती हैं तो आँखें नहीं चलती लेकिन हम चलते हैं।



जादुई झोला

एक सुबह जब गिल्लू कोटर से बाहर निकली तो बारिश की एक बूँद उस पर पड़ी। उसने सोचा कि अभी तो उसने खाने का सामान भी इकट्ठा नहीं किया और बरसात का मौसम आ गया। वह उदास हो गई। दूर से उछल कर आते हुए चीकू ने उसकी उदासी देख ली थी। वह झट से वापस गया और एक छोटा—सा झोला लेकर लौटा।

"कैसी हो गिल्लू? तुम इतनी उदास क्यों हो?" चीकू ने पूछा।

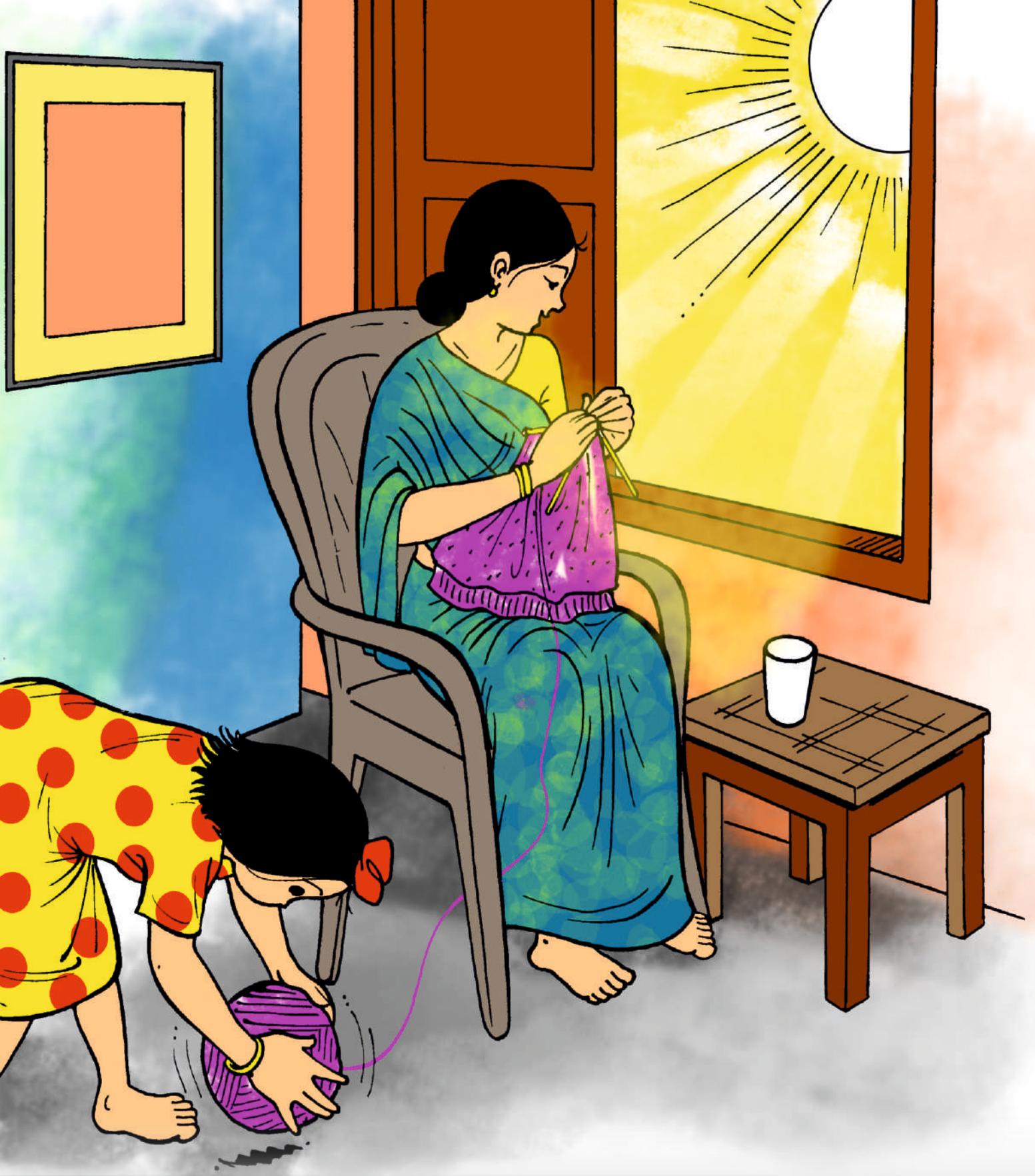
"देखो, बरसात आने वाली है और मैंने खाने का सामान भी नहीं बटोरा। अब मैं क्या करूँगी?" गिल्लू रुआँसी होकर बोली।



"बस इतनी सी बात, अरे! मेरे पास एक जादुई झोला है। यह लो और उदास मत हो, मेरी प्यारी गिल्लू।" चीकू ने उसकी ओर झोला बढ़ाते हुए कहा। गिल्लू ने झोला खोलकर देखा तो उसमें कुछ सूखे मेवे और ढेर सारे गाजर थे। उसकी उदासी उड़न-छू हो चली थी। उसने मुस्कराते हुए चीकू से कहा, "तुम मेरे बहुत अच्छे दोस्त हो, चीकू।"

"तुम भी तो मेरी सबसे प्यारी दोस्त हो और भला कोई अपने दोस्त को उदास कैसे देख सकता है!" चीकू हँसते हुए बोला।

बारिश अचानक! तेज़ हो गई। वे दोनों दोस्त पेड़ की घनी छाँव के नीचे बने कोटर में बैठे बारिश का आनन्द लेने लगे।



ऊन से बंदी पतंग

बरामदे में धूप अच्छी आ रही थी। खिड़की से छन—छनकर। बरामदे में ही बैठी मम्मी स्वेटर बना रही थीं। ऊन का गोला कुर्सी से नीचे लटक रहा था। पिंकी आई और ऊन का गोला लेकर बरामदे से बाहर भाग गई। मम्मी को पता नहीं चला। वह तो स्वेटर बुनने की धुन में थी। पिंकी गोले को लेकर बाहर आ गई।

वहाँ एक पतंग गिरी हुई मिली । उसने ऊन का एक सिरा पतंग से बांध दिया । इस बीच मम्मी ने ऊन को खींचा । खींचने पर पतंग उड़ चली ।

पिंकी की खुशी का ठिकाना न था !

